ओ३म्
कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

साप्ताहिक आर्य सन्देश

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा का मुखपत्र

वर्ष 47, अंक 24 — एक प्रति : 5 रुपये
सोमवार 29 अप्रैल, 2024 से रविवार 5 मई, 2024
विक्रमी सम्वत् 2081 — सृष्टि सम्वत् 1960853125
दयानन्दाब्द : 201 — पृष्ठ : 8
वार्षिक शुल्क : 250 रुपये — दूरभाष: 23360150
ई-मेल : aryasabha@yahoo.com
इंटरनेट पर पढ़ें -www.thearyasamaj.org/aryasandesh

सम्पादकीय

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा द्वारा 3 मई के लिए निश्चित अन्तर्राष्ट्रीय यज्ञ दिवस

आईए, एक समय-एक साथ, सब मिलकर करें यज्ञ - 3 मई, 2024 प्रात: 9 बजे

सम्पूर्ण संसार यज्ञमय है। यज्ञ का अर्थ है- कुछ नया निर्मित करना। ईश्वर के नियम और व्यवस्था के अनुसार समस्त ब्रह्मांड में निरंतर नूतनता के साथ अनवरत यज्ञ हो रहा है। सूर्य की किरणें, चंद्रमा की चांदनी, नदियों-झरनों का जल प्रवाह, हवा की गतिशीलता, पेड़-पौधों पर रंग-बिरंगे फूलों का खिलना, हंसना, मुस्कुराना, रसीले फलों का लगना, औषधियों-वनस्पतियों का नित नया निर्माण, ये सब यज्ञ के ही विभिन्न रूप हैं। ईश्वर द्वारा संचालित यह अखंड यज्ञ मानवमात्र को भी यज्ञमय जीवन जीने की प्रेरणा प्रदान करता है।

वस्तुत: महर्षि दयानंद सरस्वती जी की आज्ञा के अनुसार जैसे आर्य समाज वेद के पढ़ने-पढ़ाने और सुनने-सुनाने को अपना परम धर्म मानता है, वैसे ही यज्ञ के करने-कराने को भी अपना परम कर्तव्य मानता है। लेकिन मानव सेवा और परोपकार भी यज्ञ के ही रूप हैं, और इस क्रम में पौधों में पानी देना, मार्ग में गड्ढा हो उसमें मिट्टी भर देना, मानवजाति पर आश्रित पशु-पक्षियों, कीट-पतंगों को भोजन- पानी देना, दीन दुखियों की सेवा-सहायता करना, नेत्रहीन को सड़क पार करा देना, यह भी यज्ञ के लघु रूप हैं। जो व्यक्ति, परिवार, संगठन ऐसे छोटे या बड़े स्तर पर परोपकार के प्रकल्प चलाता है, वह मानव कल्याण के यज्ञ में ही आहुति दे रहा है।

आर्य समाज द्वारा प्रारंभ से ही निरंतर मानव सेवा और राष्ट्र निर्माण का अखंड यज्ञ चल रहा है। शिक्षा, चिकित्सा और सुरक्षा के रूप में अनगिनत सेवा कार्य आर्य समाज निरंतर करता आ रहा है। एक वाक्य में अगर कहा जाए तो आर्य समाज द्वारा की जा रही मानव सेवा नए भारत और नए विश्व के निर्माण में अहम भूमिका निभा रही है। मानव सेवा के इस वृहद यज्ञ में हमें स्मरण आता वह क्रूर समय जब पूरा देश और दुनिया थम सी गई थी। एक मनुष्य दूसरे मनुष्य से उचित दूरी बनाकर भी स्वयं को सुरक्षित अनुभव नहीं कर रहा था, उस कोरोना काल में जब निर्धन मजदूर लोगों के लिये भोजन पानी समस्या विकट हो गयी थी उस समय आर्य समाज ने जो सेवा के कार्य किये वे अत्यन्त एतिहासिक अविस्मणीय है। उस समय आर्य समाज ने जहाँ एक तरफ मजबूर, बेबस, लाचार लोगों को तीनों समय का लम्बे समय तक भोजन प्रदान किया, वहीं शमशानों में जाकर आर्य वीर दल के युवाओं ने अन्तिम संस्कार भी कराये। ऐसे विपरीत समय में जब अपने भी मृतक को हाथ लगाने से भी डरते थे तब आर्य समाज के रण बाकुरो ने अपनी जान की बाजी लगाकर सेवा, संस्कृति और संस्कारों को जीवित रखने का अनुकरणीय कार्य किया। उसी काल खण्ड में सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के आह्वान् पर 3 मई 2020 को प्रात: 9 बजे भारत के कोने कोने में और विदेशों में लाखों आर्य परिवारों ने एक समय पर एक साथ यज्ञ करके इतिहास रचा था।

यह अंतर्राष्ट्रीय यज्ञ दिवस सातों महाद्वीपों के 36 से अधिक देशों में कोरोना महामारी से मावनता की रक्षा के लिए आयोजित किया गया था। इस यज्ञ में हर आयु वर्ग के स्त्री-पुरूषों ने, उत्साह और उल्लास पूर्वक भाग लिया। तब से लेकर हर वर्ष आर्य समाज 3 मई को एक समय पर एक साथ विश्वस्तर पर यज्ञ करता आ रहा है। यू तो आर्य समाजों में, आर्य पररिवारों में और अन्य आर्य संस्थाओं में दैनिक, साप्ताहिक, पाक्षिक और अनेका अनेक यज्ञों का आयोजन होता ही है लेकिन 3 मई का यज्ञ अपने आप में इस लिए ही अनौखा और अनूठा सिद्ध होता है क्योकि यह लाखों परिवारों द्वारा एक समय एक साथ किया जाता है सामूहिक और एकरूपता की शक्ति का अपना ही प्रभाव होता है इसलिए आने वाली 3 मई 2024 को मिलकर यज्ञ करें। - *शेष पृष्ठ 2 पर*

..... महर्षि दयानन्द सरस्वती की 200वीं जयंती और आर्य समाज के 150वें स्थापना दिवस के दो वर्षीय आयोजनों के अन्तर्गत हमने बड़े-बड़े विशाल कार्यक्रम सफलता पूर्वक सम्पादित किये हैं। इस क्रम में 3 मई 2024 का दिन विश्व यज्ञ दिवस के रूप में एक साथ मिलकर मनाना हमारा कर्तव्य भी है और सौभाग्य भी है। आइए इस ऐतिहासिक दिवस पर अपने व्यस्त कार्यक्रमों में से समय निकाल कर एक साथ एक समय पर प्रात: काल 9 बजे यज्ञ करें और दूसरों की भी यज्ञ करने के लिए प्रेरित करें। तभी यज्ञ की ज्योति जलती रहेगी और ओम् का झंडा ऊँचा रहेगा। संपूर्ण विश्व के आर्यजनों से निवदेन है कि 3 मई 2024 यज्ञ दिवस सोशल मिडिया के माध्यम से जन-जन तक पहुँचायें। यज्ञ करते हुए अपने अपने परिवार और आर्य संस्थाओं के फोटो सोशल मिडिया के विभिन्न माध्यमों से प्रेषित करें।.....

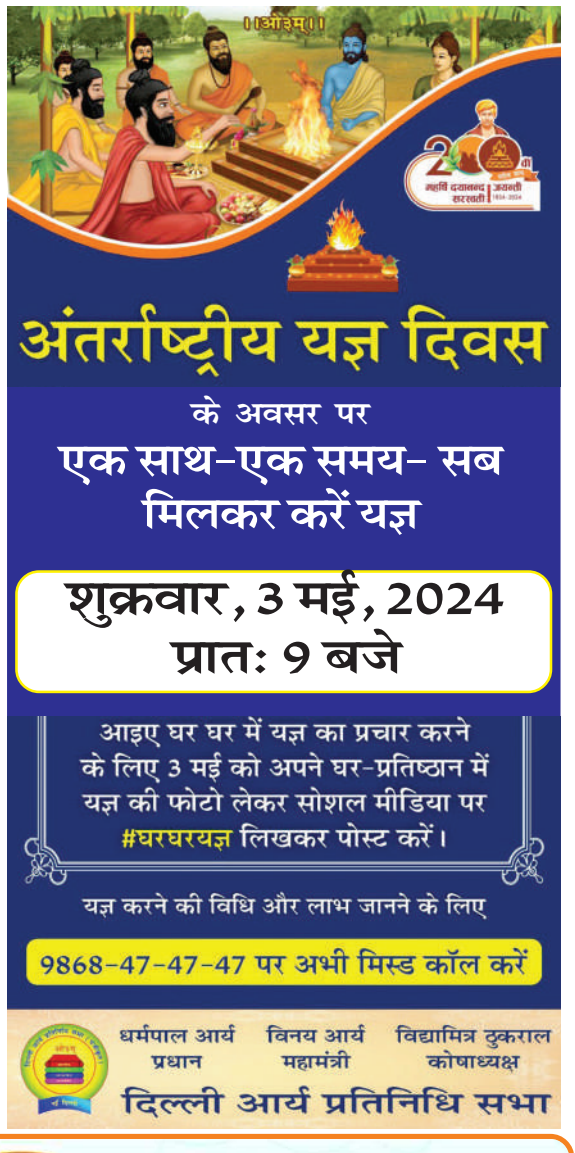

देववाणी-संस्कृत

प्रभो! मेरी पुकार सुन

वेद-स्वाध्याय

त्रातारमिन्द्रमवितारमिन्द्रं हवेहवे सुहवं शूरमिन्द्रम्।
ह्वयामि शक्रं पुरुहूतमिन्द्र स्वस्ति नो मघवा धात्विन्द्रः।। -ऋ. 6/47/11
ऋषिः गर्गः।। देवता - इन्द्रः।। छन्दः विराट्त्रिष्टुप्।।

शब्दार्थ - त्रातारं इन्द्रम्= पालन करने वाले इन्द्र को, **अवितारं इन्द्रम्**= रक्षा करनेवाले इन्द्र को हवे हवे **सुहवम्**= एक-एक संग्राम में सुख से पुकारने योग्य **शूरं इन्द्रम्**=पराक्रमी इन्द्र को और **शक्रं इन्द्रम्**=सर्वशक्तिमान् इन्द्र को **पुरुहूतं इन्द्रम्**=जिसे असंख्यों सत्पुरुषों ने समय-समय पर पुकारा है-उस इन्द्र को मैं भी **ह्वयामि**=पुकारता हूं, बुलाता हूं। **मघवा इन्द्रः**=वह ऐश्वर्यवान् **इन्द्र नः स्वस्ति धातु**=हमारा कल्याण करे

विनय- यह संसार एक रणस्थली है। इसमें प्रत्येक मनुष्य अपनी समझ के अनुसार किसी-न-किसी विजय को पाने में लगा रहता है और उसके लिए दिन-रात संघर्ष में लग जाता है। यद्यपि इन संघर्षो में विजय पाने के लिए मनुष्य प्रायः अपने शरीर-बल, बुद्धि-बल, संगठन-बल, विज्ञान-बल, मित्र-बल, सैन्य-बल आदि बलों का प्रयोग करता हुआ अभिमान से समझता है कि मैं इन बलों द्वारा ये सब लड़ाइयाँ जीत लूँगा, परन्तु एक समय आता है जब मनुष्य इन सब बाह्य-बलों से हारकर, निराश होकर, संसार की किसी अज्ञात शक्ति को ढूंढने व पुकारने लगता है। 'हे राम', या 'अल्लाह' या 'O my God' आदि कहकर किसी-न-किसी नाम से, हे इन्द्र! असल में वह तुझे पुकार उठता है। तब पता लगता है कि, हे संसार की अज्ञात, अदृष्य शक्ते! तू ही एकमात्र शक्ति है। संसार के शेष सब बल तेरे ही आधार से बल हैं। जब तू चाहता है तब वे बल होते हैं, जब तेरी इच्छा नहीं होती तब किसी भी बल में शक्ति नहीं रहती। इसलिए, हे इन्द्र! तू ही मेरा सच्चा पालक है ओर तू ही एकमात्र सब आपत्तियों से मेरा रक्षक है। तुझ ही महापराक्रमी को हर संग्राम में पुकारना चाहिए। तेरा ही पुकारना शोभन है, सुफलदायक है और किसी को पुकारना निष्फल है, बेकार है। पुकारा हुआतू भक्तजनों के संकट एक क्षण में दूर कर देता है। तू सर्वशक्तिमान् है। अतएव तू 'पुरुहूत' है, सदा से जबसे सृष्टि चली है सन्त लोग तुझे आड़े समय में पुकारते रहे हैं, याद करते रहे हैं। हे शक्र! तुझे छोड़कर मनुष्य और किसे पुकारे? इसलिए, हे इन्द्र! मैं भी तेरी पुकार मचा रहा हूं। मघवन्! तू मेरे लिए कल्याणकारी होता हुआ मेरी पुकार सुन। मैं निश्चय से जानता हूं कि मैं तेरा पवित्र नाम लेता हुआ अपने इस जीवन की सब लड़ाइयों में विजय पाता चला जाऊँगा। मुझे किसी युद्ध में किसी भी अन्य हथियार की आवश्यका नहीं। बस, तू मेरी वाणी पर रहे, यही चाहिए। तेरा नाम पुकारना मुझे सब विपत्तियों से पार कर देगा।

-: साभार :- वैदिक विनय

वैदिक विनय : यह पुस्तक वैदिक प्रकाशन, दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15 हनुमान रोड, नई दिल्ली में उपलब्ध है। अपने ज्ञानवर्धन के लिए आज ही अपना आदेश मो. नं. 9540040339 पर प्रेषित करें।

पृष्ठ 3 का शेष

गले लगाइए - देश बचाइए

राष्ट्र मजबूत होगा तथा जातीय एजेंडा खड़ा करने वाले बेनकाब होंगे। समाधान के रूप में हम अपने देश की मजबूती के लिए ये कहना चाहेंगे कि आप इस समस्या को गहराई से सोचें और समाधान में अपना सप्रेम सहयोग प्रदान करें।

गले लगाने का तात्पर्य यहाँ मदद, उपकार, सहायता और किसी का जीवन ऊपर उठाने से ही है। जैसे अगर आप इस योग्य हैं कि किसी जरूरतमंद को छोट-मोटा व्यवसाय आरम्भ करा सकते हैं तो जरूर सहायता करें।

अगर आप इस योग्य हैं कि किसी निर्धन परिवार के बच्चों को पुस्तक, कपड़े या शिक्षा सम्बन्धित कुछ जरूरी सहायता कर सकते हैं तो यह भी देशभक्ति ही है।

आप इस योग्य हैं कि किसी जरूरमन्द परिवार की बेटी की शादी में अपनी ओर से कुछ सहायता कर सकें तो यह भी आज के समय की देशभक्ति ही है और ये ही वास्तविकता में देवी की पूजा है।

इसके अतिरिक्त भी आप कई अन्य माध्यमों से, किसी की भी मदद कर उन्हें अपनापन, समानता, बन्धुत्व का सन्देश दे सकते हैं। आर्य समाज का यही मिशन है कि भारत वर्ष 2047 तक, जब वो अपनी आजादी के सौ साल पूरे होने का जश्न मना रहा होगा, तब हम समाज में गर्व के साथ समानता का परचम भी फहरा चुके होंगे। आप कुछ भी न कर सकें तो त्यौहार या उत्सव पर उनके घर जायें या उन्हें अपने घर बुलाएं, प्रेम से मिलें , किसी जरूरतमन्द के लिए स्नेह का स्पर्श भी बहुत बड़ी शक्ति का कार्य करता है।

संसार में वही कृष्ण स्वरूप है जो अपने से निर्धन के लिए हृदय के द्वार खोल दें। जो भी धनी हैं उसे यह जरूर सोचना होगा कि परमात्मा की कैसी कृपा रही उस पर जो उसे किसी जरूरतमन्द की सहायता के लिए योग्य बनाया। सोचिये जो आपसे प्यार व सहयोग की अपेक्षा रखता है आपका छोटा-सा सहभाग उसके जीवन में कितना बड़ा परिवर्तन ला सकता है। उसे ऊपर उठाने में कितना काम आ सकता है! आज प्रबुद्ध महानुभावों को इस बात को समझना होगा कि हमें बाहर की ताकत कमजोर नहीं कर सकेंगी, हमारा राष्ट्र कमजोर होगा तो ऊंच-नीच और जातीय खाई के कारण ही। आज भी जितने राष्ट्र विरोधी एजेंडे पर कार्य हो रहा है वह पूरी तरह से जातीय विघटन के आधार पर ही है। अतः हम अपने स्तर पर यानि इस खाई को पाटने में कोई भूमिका निभा सकेंगे, तो माने कि मैं देश रक्षा-राष्ट्र रक्षा की अपनी जिम्मेदारी निभा रहा हूँ।

किसी की सहायता करने के लिए धन का बहुत मात्रा में होना जरूरी नहीं, सहयोग और सहायता की इच्छा होना जरूरी है। अगर आप स्वयं सहायता नहीं कर सकते, तो किसी सक्षम व्यक्ति से उसकी सहायता करवाने की प्रार्थना करना भी गले लगाना ही है।

सोचिये हमें अपने समाज में जातियों के बण्डल चाहिए या एकजुट समाज? इसे आप बंधी झाड़ू की कीमत वाली कहावत से समझ सकते हैं। अपने मन से छुआ-छूत, ऊंच-नीच, जातिगत भेदभाव की दीवारें हटा दें। यदि हम वास्तव में ऐसा कर सके तो समझिये आप अपने देश के सच्चे सैनिक की भूमिका निभा सकने में सक्षम हो गये।

सबको उस परमपिता परमात्मा की ही संतान समझकर सम्मान देकर देखिये, कैसे मजबूत होगा भारत, इस लिए नारा है-**गले लगाइए-देश बचाइए.....**। क्योंकि हमारी इस नादानी ने हमारे समाज को कितना खोखला कर दिया है, इसकी कुछ सच्ची घटनाओं पर आधारित पुस्तक का ये संकलन है। - ***सम्पादक***

पृष्ठ 7 का शेष

कोल्हापुर नरेश राजर्षि .....

भी सामाजिक, धार्मिक और राजनीतिक मंथन में उनकी भूमिका बहुत महत्वपूर्ण है। वह जातिगत भेदभाव के कट्टर विरोधी थे क्योंकि वह सामाजिक परिवर्तन के लिए पक्षधर थे आज भी हमारे समय में शाहू महाराज से बहुत-सी बातें सीखने की जरूरत है, खासकर उनके सामाजिक न्याय के प्रति प्रतिबद्धता, जाति उन्मूलन, महिलाओं की मुक्ति और धार्मिक सद्भाव जैसे मूल्य। डॉ. भीमराव अम्बेडकर जी ने भी एक बार कहा था कि शाहू महाराज जी की जयंती को एक वृहद् त्योहार के रूप मे मनाया जाये। स्वामी दयानन्द के अटूट शिष्य एवं दलितोद्धार के संदेशवाहक आर्य नरेश श्री शाहू जी महाराज 6 मई 1922 तक अपनी अंतिम साँस तक अपने छोटे से जीवन में अनेकों वो काम कर गये जो एक लम्बी आयु लेकर भी को इन्सान नहीं कर पाता उनकी पुण्यतिथि पर महान व्यक्तित्व को आर्य समाज का शत-शत नमन। - ***राजीव चौधरी***

प्रथम पृष्ठ का शेष

आईए, एक समय-एक साथ..

'सर्वे भवन्तु सुखिनः सर्वे सन्तु निरामया' की भावनाओं और कामनाओं को साकार करें।

यज्ञ के ऊपर आर्य समाज शोध पत्रक तो आपने देखा ही होगा जिसने यह सिद्ध किया गया है कि यज्ञ से किस तरह वायु प्रदूषण कम होता है, प्रकृति का संरक्षण और संवर्धन होता है। 3 मई को सामूहिक रूप से यज्ञ करने का तात्पर्य यह भी है कि लोगों मन में यज्ञ करने के प्रति भाव जागें, लोग यज्ञ की श्रेष्ठ विधि को अपनायें, वातावरण को शुद्ध बनाने के लिए उत्तम सामिग्री लेकर स्वयं यज्ञ करे और दूसरों को भी प्रेरित करें। सम्पूर्ण विश्व में यज्ञ की सुगन्धि हो, वेद मंत्रों का पाठ हो, जिसके परिणाम स्वरूप हवा-पानी शुद्ध हो और मानव मात्र सुखी और निरोग रहे इस लिए समस्त आर्यजन केवल 3 मई 2024 को ही नहीं अपितु हर वर्ष 3 मई यज्ञ करने का संकल्प लें। यज्ञ 3 मई के यज्ञ दिवस प्रचार प्रसार करना भी ना भूलें सभी लोग यज्ञ करते हुए अपना फोटो सोशल मीडिया पर भेजें, व्हाट्सअप करें और यज्ञ दिवस को सफल बनायें अपने आस पड़ौस मित्रों रिश्तेदारों को भी यज्ञ करने का संदेश दें। - ***सम्पादक***

शोक समाचार

श्री भूषणलाल वर्मा जी का निधन

आर्यसमाज मोती नगर एवं पश्चिमी दिल्ली वेद प्रचार मंडल के पूर्व कोषाध्यक्ष के रूप में अपनी अथक सेवाएं देने वाले, प. दिल्ली वेद प्रचार मंडल के मन्त्री श्री राकेश आर्य जी के श्वसुर श्री भूषण लाल वर्मा जी का दिनांक 24 अप्रैल, 2024 को लगभग 84वर्ष की आयु में निधन हो गया। उनकी स्मृति में शान्ति यज्ञ एवं श्रद्धांजलि सभा 27 अप्रैल को सम्पन्न हुई।

श्री राजीव भाटिया जी का निधन

आर्यसमाज हनुमान रोड, नई दिल्ली के पूर्व उपमन्त्री एवं पूर्व कोषाध्यक्ष श्री राजीव कुमार भाटिया जी का दिनांक 1 मई, 2024 को लगभग 66 वर्ष की आयु में अकस्मात निधन हो गया। उपका अन्तिम संस्कार पूर्ण वैदिक रीति से पंजाबी बाग शमशान घाट पर किया गया।

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा एवं आर्यसन्देश परिवार के समस्त अधिकारी एवं कार्यकर्त्ता परमपिता परमात्मा से प्रार्थना करते हैं कि दिवंगत आत्माओं को सद्गति एवं शोक-संतप्त बपरिजनों को इस दारुण दुःख को सहन करने की शक्ति, सामर्थ्य एवं उनके पदचिह्नों पर चलने की प्रेरणा प्रदान करे। -सम्पादक

200वीं महर्षि दयानन्द सरस्वती जयन्ती 1824-2024

देश, धर्म, संस्कृति और संस्कारों को लेकर उत्पन्न हुई चुनौतियों का चिन्तन 1

गले लगाइए - देश बचाइए

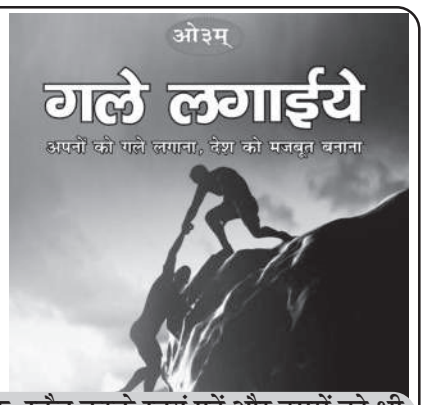

भारत के प्राचीन इतिहास को पढ़ें तो उस समय के वैभव शाली समाज को देखकर आज भी गर्व होता है, न ऊंच नीच, न जाति भेद, नैतिकता और विज्ञान के उच्चतम शिखर पर थे हम, सारी दुनिया हमारे देश में शिक्षा प्राप्त करने आती थी। क्या कारण हुआ कि हम वैभवशाली भारत से गुलाम भारत बन गये, गहराई में जायेंगे तो आप पाएंगे इसके पीछे का बड़ा कारण है, भाई-भाई में ऊंच-नीच का भेदभाव होते चले जाना। इसके साथ ही कब हम जातियों और उपजातियों में बंट गये, कब हममें ऊंच-नीच का बंटवारा हो गया। वास्तव में हुआ नहीं था बल्कि हमारे ऊपर अपना अधिकार करने के लिए हमें बांटा गया। हम षड्यंत्र का शिकार हो गये और गुलाम भी। हालात यहाँ तक पहुँच गए कि हम ने सूरज से भी वैर कर लिया, यानि हम अपने ही किसी देशवासी की परछाई भी पड़ जाने पर खुद को अपवित्र मानने लगे। आइऐ, कुछ विचार करते हैं-

न जाने जीवन में ऐसे कितने अवसर आते हैं जब आप किसी इंसान को गले लगाते हैं। गले मिलना स्वभाव प्रदर्शन की एक उपयुक्त विधि है। यह तरीका दिखाता है कि आप उस व्यक्ति की परवाह करते हैं और हम अच्छे बुरे समय में उसका साथ देंगे। एक ये भाव ही तो होता है जो किसी से निकटता दर्शाता है। परम स्नेह की नि:शब्द अभिव्यक्ति आखिर गले लगाने से बेहतर और कुछ नहीं हो सकती।

यह तो बिल्कुल सत्य है कि कानून की नजर में आज सब सामान हैं। लेकिन समाज की नजर में क्या वास्तव में ऐसा है? इस सन्दर्भ में अगर आगे बढ़े तो हमें स्वीकार करके चलना होगा कि 15 अगस्त, 1947 को हमारा देश आजाद हुआ। जब हमारा देश आजाद हुआ था तो यह सैकड़ों रियासतों में बंटा हुआ था, तब देश और दुनिया के लोग यह मानने को तैयार नहीं थे कि भारत मजबूत हो पायेगा, क्योंकि भारत इतनी रियासतों में बंटा हुआ था, इतनी जाति-उपजाति, ऊंच-नीच, वेदभाव, इतने पंथ, इतने मजहब, और धर्म के मानने वाले लोग यहां रहते हैं, क्या यह भारत एक रह पायेगा? क्या यह भारत एकजुट रह पायेगा? यह सच्चाई है कि हमारा देश रियासतों के जंजाल से मुक्त हो गया और इसीलिए हमारा भारत राष्ट्र के रूप में मजबूत हो गया, किन्तु जातिवादी जंजाल में यह देश आज भी उलझा होने से उतनी सामाजिक मजबूती नहीं प्राप्त कर सका।

राजनीति एवं कुकरमुत्तों की तरह उपजते अनेक जातिवादी उपजातिवादी कुछेक संगठनों द्वारा कई अवसरों पर आपस में बांटने या हीनता की भावना पैदा करने का षड्यंत्र आज साफ-साफ झलक रहा है। आज नहीं तो कल यह षड्यंत्र इस

सत्य घटनाओं पर आधारित सॅम्पूर्ण पुस्तक स्कैन करके स्वयं पढ़ें और दूसरों को भी पढ़ाएं : पुस्तक प्राप्त करने के लिए सम्पर्क करें -
दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा (पं.), 15, हनुमान रोड, नई दिल्ली-1
दूरभाष : 011-23360150, मो. 09540040339
ऑन लाइन खरीदें : www.vedicprakashan.com

भारत की आत्मा के लिए नुकसानदायक हो जायेगा। इसे समझने के लिए कुछ समय पहले ध्वस्त हुआ नोएडा का ट्विन टावर आज बेहतर उदाहरण है। ये बिल्डिंग्स 13 साल में बनी थी। इसके बाद इसमें दो महीने तक बारूद लगाया गया और अंत में सिर्फ 12 सेकेंड में यह ध्वस्त हो गयी थी। यानि सामाजिक एकता बनती तो बरसों में है पर बिखरने में कुछ मिनट ही लगते हैं।

पिछले कई दशकों से समानता, समरसता के क्षेत्र में हमनें बहुत कुछ किया। किन्तु फिर भी आज कहीं जाति के कारण दुल्हे को घोड़ी पर नहीं चढ़ने दिया जाता, कहीं दुल्हन डोली में नहीं बैठ सकती। कहीं मन्दिर में जाने से रोका जाता है, कहीं छू लेने मात्र से ही गंगा नहाने की परम्परा अब भी जीवित है, साथ बैठकर खाने से पाप की दुहाई, भला समाज में बढ़ते विघटन को कैसे रोका जा सकता है?

हलांकि शहरी क्षेत्रों में आज ऊंच-नीच जैसा भेदभाव लगभग समाप्त हो चुका है। होटल या रेस्टोरेन्ट हो अथवा रेहड़ी-पटरी, भोजन से लेकर सभी जगह आज जातिवाद समाप्त हो चुका है। चाय की दुकान हो या पान की टपरी आज कोई किसी से जाति नहीं पूछता, न किसी के अन्दर यह चीज उपजती। हां! ग्रामीण आंचलों में अभी भी कुछ जगह शेष है। किन्तु इसमें समूचे किसी समाज को दोषी नहीं ठहराया जा सकता है। बहुतों के प्रयास से कई सदियों की बीमारी जो धीरे-धीरे समाप्त हो रही है। हम सबके सामूहिक प्रयास से आने वाले समय में ये बिल्कुल समाप्त हो जाएगी ऐसी हमारी आशा है। किन्तु देश में कई घटक ऐसे हैं जो वास्तव में इस को जड़ से खत्म होने नहीं देना चाहते। हमें, इस षड्यंत्र को समझना होगा।

वास्तव में आज एक अलग किस्म की आग, मीडिया, सोशल मीडिया आदि के माध्यम से सुलगाई जा रही है। हर खबर में 'दलित' शब्द का उपयोग होगा 'जातीय' पहचान उजागर कर उसे एक एजेंडे के तौर पर परोसा जाना। उक्त जातीय समूह को यह तक आभास कराना कि लोकतान्त्रिक प्रणाली में उनका वजूद समाप्त होने वाला है। यानि हर एक घटना को एक अलग रूप दिया जाता है, बात जातीय गौरव या हीनता पर लाई जाती है तथा आपसी विद्वेष पैदा किया जाता है। इसमें ऐसा करने वालों का राजनैतिक स्वार्थ और उनका एजेंडा तो सफल हो जाता है किन्तु भारत की एकता पर जरूर यह एक चोट के निशान की भांति रह जाता है। आज भी अनेकों शक्तियां भारत को मूल रूप से कमजोर देखना चाहती है और हमारी कमजोरियों को उभारने में अपना साधन खर्च करती है।

हो सकता है ऐसे षड्यंत्र करने वालों को धन विदेशी दुश्मनों से प्राप्त हो रहा हो, जो भारत को जातीय संघर्ष में उलझाकर रखना चाहते हैं। अमेरिका के एक उद्योगपति जॉर्ज सोरोस द्वारा भारत में आर्थिक अस्थिरता लाकर देश के विकास रथ को रोके जाने को खबरें भी आई थी ताकि भारत की सीमा सुरक्षा को कमजोर किया जा सके।

हालांकि अगर देखा जाये तो लगता है, एजेंडा केवल इतना भर नहीं है। जातीय विद्वेष, जातीय नफरत, गरीबी, अशिक्षा, असमानता जहाँ कहीं भी है उसका लाभ लेने में अनेक एजेंसियां शामिल हो जाती हैं। कुछ लोग गरीबी तथा जातीय विद्वेष का लाभ धर्मांतरण के लिए कर रहे हैं। तो कुछ इसका लाभ भारत की प्राचीन संस्कृति को मिटाने के लिए कर रहे हैं। यहाँ डॉ. भीमराव अंबेडकर जी का कथन बड़ा प्रासंगिक है उन्होंने कहा था, भारत में ही रहूंगा और भारत की जो परम्पराएं रही हैं, भारत की जो संस्कृति रही है, भारत की अन्य जो विधाएं रही हैं, उन सारी चीजों को ध्यान में रखकर भारत को एक सशक्त भारत बनाने में मैं अपनी महत्त्वपूर्ण भूमिका का निर्वाह करूंगा, यह उनका एक संकल्प था। उन्होंने यह कभी नहीं सोचा कि भारत में हमारी उपेक्षा हुई है, भारत में मुझे समय-समय पर अपमान झेलना पड़ा है, तिरस्कार झेलना पड़ा है, मैं भारत छोड़कर दुनिया के कहीं दूसरे देशों में चला जाऊंगा, या भारत के पतन की अभिलाषा करूंगा।

किन्तु आज इसके विपरीत भीमराव जी का नाम लेकर उनके उपासक बनकर मौखिक रूप से उन्हें अपना आदर्श मानने वाले ऐसे कई प्रपंच रच रहे हैं जो सामाजिक स्तर पर भूचाल लाने के लिए काफी है। चूंकि आर्य समाज ने बहुत पहले इनके इरोद भांप लिए थे और एक नारा दिया था- **''गले से लगा लो इन्हें, वरना यह लाल गैरों के घर जायेंगे।''** आज हमें दशकों पुराने इस आन्दोलन तथा नारे को पुनर्जीवित करना होगा। सार्थक करना होगा जब वो जातीय विद्वेष की फैलाने की बात करेंगे, हम उन्हें गले लगाकर समानता का एहसास देंगे।

आज सोशल मीडिया पर अनेकों चैनल, फेसबुक, पेज, केवल और केवल नफरत फैलाने और जातीय सम्मान के नाम पर जातीय नफरत फैलाने का कार्य कर रहे हैं। इनके लाखों की संख्या में फोलोवर्स भी हैं। आखिर इनको चलाने में पैसा भी लगता है तो कौन कर रहा है इनके लिए निवेश? इस प्रश्न का उत्तर भी खोजा जाना चाहिए।

एक किस्सा यहाँ बेहद जरूरी है। एक बार किसी ने स्वामी दयानन्द सरस्वती जी से पूछा था कि ''आप कैसे संन्यासी हैं जो नाई की रोटी खा रहे हैं?'' इस पर स्वामी जी का सरल सा जवाव था कि ''नहीं भाई, मैं तो आटे की रोटी खा रहा हूँ।''

यही नहीं एक प्रसंग महाभारत का भी है जब राजा बने योगिराज कृष्ण ने अपने मित्र सुदामा की गरीबी को नहीं देखा, न उससे राजा की तरह मिले बल्कि उसे गले लगाकर समानता का अहसास कराया और उसकी सहायता भी की थी। श्रीराम जी का शबरी के साथ बैठकर बेर खाना हमारे इतिहास की सामाजिक समरसता का वह उदाहरण है जिनसे हम सीख सकते हैं।

यानि वो ऊंच-नीच की बात करके सामाजिक विखंडन पैदा करने का षड्यंत्र रचेंगे। तो हम उन्हें गले लगाकर निकट लाकर अपने पूर्वज ऋषि-महर्षि की तरह समरसता का अनुभव करायेंगे।

वो अमीर-गरीब की खाई पर वितंडा खड़ा करेंगे तो हम आर्थिक रूप से जिस लायक होंगे, उन्हें गले लगाकर इस खाई को पाटने की कोशिश करेंगे।

वो उन्हें दलित कहकर किसी के अन्दर जातीय पीड़ा को जन्म देंगे। हम उन्हें भाई कहकर गले लगाकर उस पीड़ा को गौरव में बदल देंगे।

हम अपने पूरे दल-बल-शक्ति के साथ खड़े होंगे। समाज में आज भी जो लोग वंचित हैं ऐसे लोगों को गले लगाने व सुखी बनाने से हमारे समाज में समानता आएगी, लोग सुखी होंगे।

- शेष पृष्ठ 2 पर

आर्यवीर एवं वीरांगना दल के ग्रीष्मकालीन चरित्र निर्माण एवं आत्मरक्षा प्रशिक्षण शिविर

अधिक से अधिक संख्या में भाग लें आर्य परिवारों के युवक-युवतियां

जीवन की यात्रा जिस मार्ग से होकर गुजरती है, वह कभी सीधा और सरल नहीं होता। अत: जीवन में उन्नति, प्रगति और सफलता के पथ पर आगे बढ़ने के लिए मनुष्य को आर्य समाज के छठे नियम के अनुसार शारीरिक, आत्मिक और सामाजिक उन्नति करनी ही चाहिए। क्योंकि संसार का उपकार करना आर्य समाज का मुख्य उद्देश्य तो है, किन्तु यह तभी संभव है जब हम शारीरिक रूप से सक्षम होंगे, आत्मिक रूप से बलवान होंगे और सामाजिक स्तर पर संगठित होंगे।

आर्यवीर दल और आर्य वीरांगना दल आर्य समाज के युवाओं का महत्वपूर्ण संगठन है। इसकी स्थापना 26 जनवरी 1929 को सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा द्वारा की गई थी। तब से लेकर अब तक हमारा यह संगठन आर्य समाज के नियम, मान्यताओं, परंपराओं और सिद्धांतों को लेकर राष्ट्र सेवा और मानव निर्माण के कार्यों में अपना अनुपम योगदान देता आ रहा है। आर्य समाज के प्रचार प्रसार और सेवा कार्यों को गति प्रदान करने वाले आर्यवीर दल, आर्य वीरांगना दल के युवाओं ने जब-जब कोई राष्ट्रीय आपदा अथवा महामारी विकट समस्या बनकर आइ, तब-तब अपने प्राणों की और अपने परिवारों की परवाह न करते हुए आर्य वीरों, वीरांगनाओं ने सेवा और समर्पण का गौरवशाली इतिहास रचा है।

कोरोना काल को अगर याद करें तो मौत के उस भयावह तांडव के विषय में सोचकर आज भी रोंगटे खड़े हो जाते हैं। वह कैसा मंजर था जब अपनों ने अपनों का साथ छोड़ दिया था, सगे खून के सारे रिश्तों की माला टूटकर बिखर गयी थी, पिता के मृत शरीर को शमशान के बाहर छोड़ने से भी पुत्र और परिवार बचकर निकलने में ही बुद्धिमानी समझ रहे थे। ऐसी विकट स्थिति में आर्य समाज के वीरों ने अपनी जान की बाजी लगाकर कोरोना से ग्रसित मृतकों का घी और सामग्री से आहुति देकर अंतिम संस्कार किया और पर्यावरण की रक्षा की।

यह तो आर्यवीर दल की एक कुछ दिन पुराने सेवा कार्य का कीर्तिमान है। अगर सेवा समर्पण का पूरा इतिहास देखा जाए तो चाहे भूकंप की त्रासदियां हों या बाढ़ का प्रकोप हो अथवा महामारी की चुनौती हर स्थान पर आर्य वीर दल ने अपना शत प्रतिशत योगदान देकर अग्रणी भूमिका निभाई है।

बंधुओ, महर्षि दयानंद सरस्वती जी का 200वीं जयंती वर्ष और आर्य समाज के 150वां स्थापना वर्ष के 2 वर्षीय आयोजनों के क्रम में सार्वदेशिक आर्य वीर दल और आर्य वीरांगना दल तथा प्रांतीय स्तरों पर ग्रीष्मकालीन शिविरों का बिगुल बज चुका है। इन सभी शिविरों में सार्वदेशिक आर्य वीर दल के माननीय अध्यक्ष स्वामी देवव्रत जी से प्रशिक्षण प्राप्त सुयोग्य शिक्षक शिक्षिकाओं द्वारा आर्य वीरों, वीरांगनाओं को चरित्र निर्माण एवं आत्मरक्षा का प्रशिक्षण प्रदान किया जाता है। आर्य परिवारों के बच्चों के लिए यह एक स्वर्णिम अवसर है। अत: अपने बच्चों के जो आपका मोह है उसे त्यागकर, उनके उज्जवल भविष्य के लिए आवासीय शिविरों में भेजने का प्रयास अवश्य ही करें। क्योंकि आधुनिक परिवेश में किशोर, युवा और बच्चों को जो विपरीत वातावरण प्राप्त हो रहा है, मोबाइल और इंटरनेट के माध्यम से जो कुछ वें सीख रहे हैं उसके विषय में तो कुछ भी कहने की आवश्यकता नहीं है। क्योंकि इस विषय में तो आप सब जानते हैं। लेकिन हमें अपने बच्चों को छुई -मुई का ऐसा पौधा नहीं बनाना चाहिए, कि कोई उंगली दिखाए और वे मुरझा जाएं, हमें तो उन्हें शारीरिक, मानसिक, बौद्धिक और आत्मिक रूप से इतना मजबूत बनाना चाहिए कि वे हर हाल में, हर स्थिति में मजबूत मनोबल के साथ सफलता का परचम लहरा सकें। जीवन के हर क्षेत्र में सफल हो सकें।

शिविर की आदर्श दिनचर्या

मौसम चाहे कोई भी हो हर मौसम की सुबह सुहानी होती है। सुबह दिवस का बचपन होता है, जिस व्यक्ति का बचपन स्वस्थ और तरोताजा होता है उसका पूरा दिन सफल होता ही होता है। अगर किसी की सुबह ही आलस्य से भरी हुई हो, उदासी से भरपूर हो तो फिर उसका पूरा दिन चिंता में बीत जाता है। इसलिए आर्य वीर दल और वीरांगना दल के शिविर में बच्चों को सुबह जल्दी उठकर, योगासन, व्यायाम, प्राणायाम, लाठी, भाला, तलवार, जूडो-कराटे, स्तूप, मलखम, कदमताल इत्यादि की शिक्षा देकर अभ्यास कराया जाता है। इसके उपरांत संध्या, हवन करना कराना भी सिखाया जाता है।

पौष्टिक आहार, भोजन

शिविर में सभी शिविरार्थियों के लिए शुद्ध, सात्विक, पौष्टिक भोजन में प्रात: काल नाश्ते से लेकर दोपहर का भोजन, रात्रि का भोजन, दूध, फल इत्यादि सभी चीजों का पूरा ध्यान रखा जाता है। भोजन के स्वादिष्ट होने के साथ-साथ स्वास्थ्य वर्धक भी हो इसका विशेष ध्यान रखा जाता है। सभी बच्चे जब सुबह शाम सुयोग्य अनुभव प्राप्त शिक्षकों के निर्देशन में व्यायाम प्राणायाम करते हैं तो उन्हें पर्याप्त भूख भी लगती है और वे रुचि पूर्वक भोजन करते हैं और स्वस्थ रहते हैं।

बौद्धिक कक्षाओं का सकारात्मक प्रभाव

आजकल हमारे बच्चे क्या सीख रहे हैं और हम उन्हें क्या सिखा रहे हैं, यह हमें अवश्य सोचना विचारना चाहिए। जिन खेतों में बीज नहीं बोए जाते वहां खरपतवार तथा झाड़-झंखाड उग ही जाते हैं। अत: शिविर में बच्चों को ऐसे शिक्षाप्रद संस्कार प्रदान किए जाते हैं, जिनसे उन्हें जीवन भर संपोषण प्राप्त होता है। और ये सभी शिक्षाएं, संस्कार बच्चों को खेल खेल में सिखाए जाते हैं। वैदिक विद्वान, आर्य संन्यासी, विशेषज्ञों द्वारा दिए गए संस्कार बच्चों को महान धरोहर के रूप में प्राप्त होते हैं, जो उनके जीवन भर काम आते हैं। शिविर में भाग लेने वाले बच्चे मातृ-पितृ भक्त, ईश्वर भक्त, राष्ट्र भक्त बनकर अपना, अपने माता-पिता का और देश का नाम रोशन करते हैं।

शिविर के उद्घाटन और समापन समारोह में भाग लें सभी आर्यजन

10 या 8 दिनों का शिविर में प्रशिक्षण प्राप्त कर शिविरार्थी जिस समय समापन समारोह में व्यायाम प्रदर्शन में सहभागी बनता है तो उसका उमंग, उत्साह से चमकता चेहरा देखने दिखाने लायक होता है। बैंड बाजों और संगीत की धुन पर करतब दिखाते आर्य वीर, वीरांगनाओं संतुलित व्यक्तित्व एक अनोखा आदर्श प्रस्तुत करता है। उस समय आर्य वीर, वीरांगनाओं के माता-पिता और उपस्थित जनसमूह रोमांचित होकर उन्हें आशीर्वाद देता है। वे पल बड़े भावुक और मनोहारी होते हैं। अत: सार्वदेशिक और प्रांतीय आर्यवीर दल एवं वीरांगना दल के शिविरों में अपने बच्चों को भेजें और उद्घाटन और समापन समारोह में अवश्य पधारें। इस अवसर पर शिविर के लिए तन, मन, धन से सहयोग भी अवश्य प्रदान करें।

- आचार्य अनिल शास्त्री

दर्शनयोग धाम (गुजरात) में वैदिक गुरुकुल भवन का शिलान्यास सम्पन्न

डॉक्टर, इंजीनियर, पायलट के साथ गुरुकुलों को अच्छे और उत्तम मनुष्य बनाने होंगे - आचार्य देवव्रत, राज्यपाल

साबरमती नदी के सुरम्य तट पर स्थित लाकरोडा ग्राम (गांधीनगर) के दर्शनयोग धाम में 'समर्पण' भवन का उद्घाटन और वैदिक गुरुकुल का शिलान्यास किया गया। रामनवमी के शुभ दिन पर गुजरात के राज्यपाल आचार्य देवव्रत जी ने दर्शन योगधाम परिसर में वैदिक गुरुकुल भवन की आधारशिला रखी। इस अवसर पर दिल्ली सभा के महामन्त्री श्री विनय आर्य जी भी उपस्थित रहे। जबकि बन चुके समर्पण भवन में 36 वानप्रस्थ साधना कुटियाएं हैं। कार्यक्रम वैदिक संस्कृति एवं गुरुकुलीय शिक्षा के संरक्षण एवं संवर्धन हेतु स्थापित दर्शन योग धाम में आयोजित किया गया।

गांधीनगर के लाकरोडा गांव में वैदिक संस्कृति के संरक्षण, आर्ष ज्ञान के प्रचार-प्रसार एवं संस्कृति निर्माण के लिए सक्रिय दर्शनयोग धाम में व्याकरण, वैदिक साहित्य, आयुर्वेद, ज्योतिष, दर्शन एवं उपदेशक महाविद्यालय आकार लेगा। इस मौके पर राज्यपाल आचार्य देववत ने कहा कि वैदिक गुरुकुलों में आधुनिक पढ़ाई के साथ-साथ वैदिक परंपरा, योग, संध्या-हवन और नैतिक शिक्षा को भी शामिल करने की आवश्यकता है। बदलते समय में शास्त्रों के विद्वानों को विज्ञान और तकनीक के सहारे की जरूरत है। यदि ऐसा हुआ तो शास्त्रों के विद्वानों के लिए रोजगार की समस्या नहीं रहेगी। इतना ही नहीं, उनके ज्ञान और सीखने का दायरा और भी विस्तृत होगा। आर्ष गुरुकुल का विद्यार्थी (ब्रह्मचारी) डॉक्टर, इंजीनियर, पायलट, बैरिस्टर या सेना अधिकारी नहीं बनेगा, बल्कि इन सभी को सच्चा और अच्छा इंसान बनाने की क्षमता रखेगा।

इस अवसर पर दर्शन योग धर्मार्थ ट्रस्ट के प्रबंधक न्यासी स्वामी विवेकानन्द परिव्राजक एवं सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान श्री सुरेशचन्द्र आर्य तथा दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के महामन्त्री श्री विनय आर्य ने प्रासंगिक उद्बोधन दिया। आपने दर्शन योगधाम परिवार के उद्घाटन एवं शिलान्यास की बधाई देते हुए अपने सन्देश में कहा कि आर्यसमाज द्वारा महर्षि दयानन्द सरस्वती जी की 200वीं जयन्ती के सफल आयोजन सहित देश विदेश में अनेक कार्यक्रम सफलतापूर्वक सम्पन्न हुए हैं। आर्यसमाज के 150वें स्थापना वर्ष एवं 200वें जयन्ती वर्ष पर आर्यसमाज द्वारा देश-और दुनिया में जागृति के लिए कुछ विशेष अभियान चलाए गए हैं, उसमें दर्शन योगधाम एवं पूरे आर्यसमाज की शिक्षण संस्थाओं की सक्रियता अवश्य बनी रहेगी। लोकार्पण समारोह के अध्यक्ष आचार्य श्री दिनेश कुमार आर्य और प्रबंध समिति के संयोजक आचार्य श्री प्रियेश जी ने सुचारू रूप से कार्यक्रम सफलता पूर्वक संपन्न किया।

दर्शन योग महाविद्यालय एवं आर्यवन आर्ष कन्या गुरुकुल का वार्षिकोत्सव सम्पन्न

आर्यवन विकास फार्म ट्रस्ट रोजड़ द्वारा संचालित दर्शन योग महाविद्यालय का 38वां एवं आर्यवन आर्ष कन्या गुरुकुल का 8वां वार्षिकोत्सव 13-14 अप्रैल को हर्षोल्लास के साथ मनाया गया। इस अवसर पर सार्वदेशिक सभा के प्रधान श्री सुरेशचन्द्र आर्य जी, दिल्ली सभा के महामन्त्री श्री विनय आर्य, स्वामी सत्यजित जी, स्वामी विवेकानन्द परिव्राजक एवं आचार्य आनन्द पुरुषार्थी सहित अनेक अतिथियों एवं विद्वानों का सान्निध्य प्राप्त हुआ। सभा महामन्त्री श्री विनय आर्य जी ने समारोह को सम्बोधित करते हुए विद्यार्थियों को इतिहास से सीख लेकर भविष्य का संधान करने के लिए प्रेरित किया। इस अवसर पर सार्वदेशिक सभा के प्रधान श्री सुरेशचन्द्र आर्य जी सहित आमन्त्रित विद्वानों को सम्मानित भी किया गया।

- ***संयोजक***

आर्यसमाज की सेवा ईकाई के अन्तर्गत सिक्किम में आर्य समाज के भवन निर्माण कार्य का निरीक्षण

सिक्किम में आर्य समाज के प्रथम और प्रमुख केन्द्र के भवन का निर्माण कार्य गत मास यज्ञ के साथ आरंभ किया गया था। अखिल भारतीय दयानन्द सेवाश्रम संघ के अन्तर्गत बनने वाले आर्यसमाज के सेवा केन्द्र के निर्माण कार्य के निरीक्षण के लिए संघ के महामन्त्री श्री जोगेन्द्र खट्टर एवं दिल्ली सभा के महामन्त्री श्री विनय आर्य जी गंगटोक (सिक्किम) पहुंचे और वहां किए जा रहे कार्यों का नीरिक्षण किया। ज्ञात हो कि सिक्किम में यह भूमि आर्य समाज द्वारा सरकार से प्राप्त की गई है।

साप्ताहिक स्वाध्याय

गढ़ से टक्कर

गतांक से आगे -

बनारस में राजा लाल माधोसिंह का आनन्द बाग प्रसिद्ध है। उस बाग में कार्तिक सुदी द्वादशी, सम्वत् 1926 के दिन बड़ी धूमधाम थी। कुछ दिन हुए, लंगोटबन्द संन्यासी इस बाग में आकर ठहरा था। विद्या की पुरी काशी के सभी प्रसिद्ध-प्रसिद्ध पण्डित मल्ल उस लंगोटबन्द के साथ अपनी बल-परीक्षा करने के लिए आने लगे हैं। 22 अक्तूबर 1869ई० के दिन रामनगर से महर्षि दयानन्द बनारस में आकर उस उद्यान में ठहरे हैं। उनके आते ही सारे नगर में हलचल मच गई है। बुद्धि और धर्म में पूर्ण स्वतन्त्रता का माननेवाला सुधारक दयानन्द, अन्ध-विश्वास और रूढ़ि के गढ़ बनारस की दीवारों को सत्य की टक्कर से गिराकर चकनाचूर करने के लिए केवल एक परमात्मा को सहायक मानकर, युद्ध भूमि में उतर आया है। काशीपुरी बहुत प्राचीन काल से विद्या की खान समझी जाती है। उसके कोने-कोने में विद्यावारिधि, और गली-गली में महामहोपाध्याय रहते हैं। महर्षि दयानन्द हिन्दू धर्म की कुरीतियों का संहार करना चाहते थे। जब तक काशी अपराजिता थी, तब तक पौराणिक धर्म को भी हारा हुआ नहीं मान सकते थे। जो पौराणिक पण्डित निरुत्तर होता था, वह काशी की ओर भागता था। कोई टका सेर व्यवस्था ले आता था, कोई महर्षि विशुद्धानन्द के नाम की दुहाई देता और कोई पण्डित राजाराम शास्त्री का नाम लेकर धमकाना चाहता था। आश्रय-हीन अन्धकार का अन्तिम आश्रय बनारस ही दिखाई देता था। निर्भय वीर महर्षि दयानन्द ने गुफा में पहुंचकर शेर को ललकारने का निश्चय किया और माधो बाग में जाकर धर्म का झण्डा गाड़ दिया।

महर्षि दयानन्द ने काशी नरेश को कहला भेजा कि यदि सत्यासत्य का निर्णय करना चाहते हो तो पण्डितों को शास्त्रार्थ के लिए तैयार करो। काशी-नरेश ने पण्डितों को बुलाकर शास्त्रार्थ के लिए कहा। पण्डितों ने उत्तर दिया कि महर्षि दयानन्द वेद का पण्डित है और वेद की ही दुहाई देता है। हम लोगों को कुछ दिन वेदों में से प्रमाण खेजने के लिए मिलने चाहिए, पीछे हम शास्त्रार्थ कर सकेंगे। 15 दिन की मुहलत दे दी गई। पण्डित लोग खूब तैयारी करते रहे। शास्त्रार्थ के लिए कार्तिक सुदी द्वादशी का दिन निश्चित किया गया था। सभा के लिए माधो बाग ही उचित स्थान समझा गया, क्योंकि महर्षि दयानन्द ने संन्यासी धर्म के अनुसार दूसरे के स्थान पर जाना स्वीकार न किया। 15 दिन व्यतीत हो गए।

आज एक ओर माधो बाग में सभा का समारोह होने लगा और दूसरी ओर से पण्डितों को सभा-स्थान तक पहुंचाने के लिए काशी-नरेश के दरबार से पालकी, छत्र, चंवर आदि सामग्री भेजी जाने लगी। आज मानो काशी के पण्डितों की परीक्षा का दिन था। इस दिन की सफलता पर उनका भविष्य अवलम्बित था। प्रतिपक्ष में कौपीनधारी साधु था, विद्या ही जिसका शस्त्र था, सत्य ही जिसका किला था और परमात्मा ही जिसका सहायक था। उधर अनेक पंडितों की मंडली थी जिनके पास विद्या-खड्ग तो थी, परन्तु स्वतन्त्र विवेक के अभाव में रूढ़िरूपी जंगार से निकम्मी हो गई थी। सत्य का मुख हिरण्मय ढक्कन से बन्द हो चुका था। परमात्मा का स्थान एक ओर जड़ मूर्तियों ने और दूसरी ओर अन्नदाता काशी नरेश ने छीन लिया था। जहां कौपीनधारी अपने सहायक पर भरोसा करके, सत्य के गढ़ में डेरा जमाकर, विद्या की तलवार पकड़े निर्भीक बैठा था, वहां अपनी शक्तियों और सहायकों को कमजोर समझकर पण्डित-मण्डली

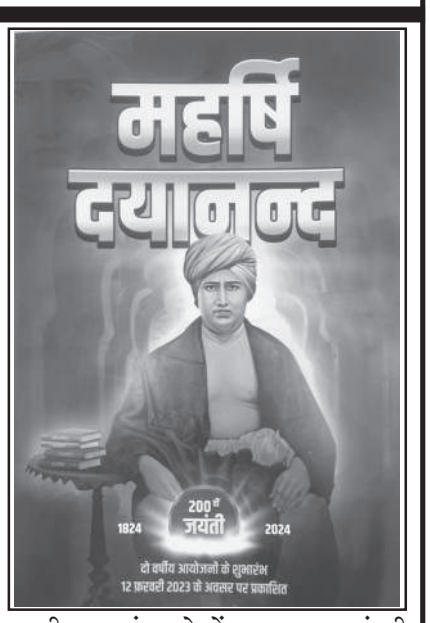

कभी छत्र-चंवर के ढोंग का आसरा ढूंढती थी, और कभी सैकड़ों शिष्यों की पंक्तियां बांधकर समझती थी कि अब तो महर्षि दयानन्द अवश्य दहल जाएगा। परंतु यहां वह लौ न थी, जो हवा के जरा-से झोंके से बुझ जाती।

- क्रमशः

पं. इन्द्र विद्यावाचस्पति जी द्वारा लिखित एवं 200वीं जयन्ती पर पुनःप्रकाशित जीवनी महर्षि दयानन्द से साभार पुस्तक प्राप्ति के लिए ऑनलाइन www.vedicprakashan.com पर अथवा 9540040339 पर आर्डर करें

Continue From Last Issue

Rishi Dayananda Saraswati's Influence Outside of India

- Ashwini K. Rajpal, Vancouver, Canada
Email : iffvs1@gmail.com

From the beginning, the *Girmit* system was plagued by a lot of abuses:

-: Recruiting was the chief cause of bad reputation.
-: Inhumane conditions on the ships to the colonies.
-: It was a system of manipulation, intimidation and exploitation of human labour.
-: Mental and physical violence were mercilessly used to increase productivity and raise the profitability of the planters.
-: Described as a new system of slavery by Hugh Tinker.

This system was temporarily halted in 1917 under the War Measures Act and was eventually abolished on January 1, 1920 which cancelled all contracts in place. Some events and representations leading to abolition of the *Girmit* system:

-: Rev. Thomas Evans of Prayagraj/Allahabad found 10 women held as captives.
-: Rev. C.F. Andrews & W.W. Pearson visited Fiji in 1915 and reported about the deplorable conditions.
-: The women of India went in deputation to the Viceroy asking that the system be abolished without delay.
-: Resolution moved by *Pandit Madan Mohan Malaviya* for abolition of *girmit* emigration was accepted by Lord Hardinge.
-: Rev. Andrews gave evidence about immoral practices to Mr. E.S. Montague, Secretary of State for India, who brought an end to this system.

The *Girmitiyas* endured many difficulties and hardships. Despite insurmountable odds and numerous obstacles, they survived and excelled. Some of these *Girmitiyas* had the good fortune to listen to *Rishi Dayananda* and/or read his books prior to emigrating to the colonies. They took their sacred scriptures, their respective languages and cultures. One such individual was *Basdeo Rai* of Gorakhpur who took a copy of *Satyaarth Prakaash* with him to Fiji in 1895.

Some countries that benefitted from *Rishi Dayananda's* influence (even though he never left India) are:

Mauritius – Official date of first girmit arrivals was November 2, 1834.

However recent research suggests it started in 1826. In 1898 a troop from Bengal went to Mauritius. Among the Bengali soldiers was one *Bholanath Tiwari* who had 2 books in his possession – the *Satyaarth Prakaash* and the *Sanskaar Vidhi*. When he left Mauritius in 1901, he handed the 2 books to *Bhikhari Singh* who passed them on to *Pandit Meghvarna*. The books then reached *Khemlal Lallah* and *Ramsurrun Moti* who were deeply impressed with their contents. They showed *Satyaarth Prakaash* to *Guruprasad Daljeetlal* who in turn showed it to *Jagmohan Gopal.* Consequently, regular *satsangs* on *Satyaarth Prakaash* were held that led to the establishment of first *Arya Samaj* in 1903 at Curepipe Road under the name '*Arya Pratinidhi Sabha Curepipe Mauritius*.'

Dr Manilal Maganlal Doctor arrived in Mauritius from India on October 13, 1907 and looked upon the *Arya Samaj* as a reliable instrument for social reform even though he was a *Vaishnavite.* On his return to India, he sent *Dr Chiranjiva Bhardwaja* to consolidate the local *Arya Samaj*. *Dr Bhardwaja* accompanied by his *dharampatni*, *Shrimati Sumangali Devi*, and 2 children landed in Mauritius on December 15, 1911. The orthodox priests opposed and even threatened him. He was asked to stop preaching the doctrine of the *Veda* and attending the *Arya Samaj* gatherings, but he did not falter. He also had to register *Arya Samaj* under the name *Arya Paropkarini Sabha* as the Colonial Administration refused to register under the name '*Arya Pratinidhi Sabha.*' *Shrimati Sumangali* opened a Hindi school for girls and in 1912 started a campaign to improve the condition of women. She toured the island criticizing child marriage and illiteracy.

Many people were inspired by *Dr Bhardwaj* and *Swami Swatantranand* and worked tirelessly for *Arya Samaj*. They were successful in preventing conversion of Hindus and performing *shuddhi,* to bring back converted Hindus to the Aryan fold. There was a strong desire for unity among the Hindus. In the general elections in January 1926 two Hindus - *Dhanpath Lallah* and *Rajkumar Gajadhar* – were elected to the Legislative council. The *Mauritius Arya Patrika,* a publication in English and Hindi, aroused the enthusiasm of its readers in *Vedic Dharm* and Hindi language.

To be Continue.....

150वें आर्यसमाज स्थापना वर्ष पर आर्य जगत् के त्यागी, बलिदानी और समर्पित महापुरुषों की गाथा

पुण्य स्मृति दिवस
6 मई पर विशेष

कोल्हापुर नरेश राजर्षि छत्रपति शाहूजी महाराज

महर्षि दयानन्द को पढ़कर जिन्होंने जानी भारत की असली पीड़ा

....सौराष्ट्र के भावनगर में अखिल भारतीय आर्यसभा (आर्यसमाज) की परिषद हुई। इस सभा के प्रमुख अतिथि राजर्षि शाहू महाराज ने भाषण में कहा सज्जनों हम थोड़ा भारतवर्ष के इतिहास पर नजर डालते हैं, हजार वर्ष पूर्व के भारतवर्ष और आज के भारतवर्ष में जमीन और आसमान का अंतर है। आज पराक्रम, ज्ञान, धर्मशिलता, उदारता सद्गुण लुप्त हो गये हैं। हजारों कुसंस्कार और रूढ़ी परंपराओं से भरा हुवा भारतवर्ष देखकर आश्चर्य नहीं होता। बालविवाह, बहुविवाह, मद्यपान, स्त्रियों को शिक्षा पर पाबंदी, वर्णश्रम धर्म कि अव्यवस्था ऐसे अनेक समाज को घातक रूढीयों से निर्जीव सा बना दिया है। अपने भाषण में अंत में उन्होंने कहा कि वैदिक धर्म ही देश को जागृत कर सकता है, स्वामी दयानंद जी का बताया हुआ यह धर्म विश्वव्यापी बनेगा।

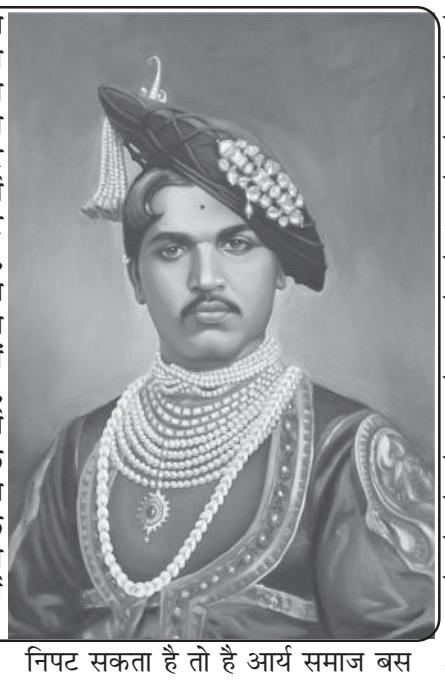

आज से करीब 110 साल पहले की बात है कोल्हापुर की भाऊसिंहजी रोड पर गंगाराम कांबले नाम के एक युवक ने चाय की दुकान खोली थी। गंगाराम कांबले ने अपनी दुकान का नाम 'सत्यसुधारक' रखा, उनकी दुकान की सफाई और चाय का स्वाद बेहतरीन था। लेकिन उच्चजाति के लोगों ने उनका बहिष्कार किया, वे बहुत नाराज थे कि एक दलित चाय पिला रहा है। एक दिन अचानक ये दुकान पूरे कोल्हापुर में चर्चा का विषय बन गई। क्योंकि दुकान पर जो चाय पीने आये थे वो थे कोल्हापुर के महाराजा छत्रपति शाहूजी। पिछली सदी के शुरुआती वर्षों में यह कोई मामूली बात नहीं थी। 26 जून 1874 को पैदा हुए शाहूजी कोई मामूली राजा नहीं थे बल्कि महाप्रतापी छत्रपति शिवाजी महाराज के वशंज थे।

आज हम उस भारत की बात कर रहे है जिसमें आज से सौ-सवा सौ साल पहले ना जाने कितने लोग अपने-अपने नाम के साथ समाज सुधारक का तमगा लिए बैठे हैं। लेकिन गहराई से देखेंगे तो पता चलेगा उनके काम सिर्फ भाषण तक सिमित रहे। जबकि एक संस्था ऐसी भी थी जिससे जुड़े लोग भाषण में नहीं सीधा जमीन पर ठोस काम में विश्वास करते थे। महाप्रतापी छत्रपति शिवाजी महाराज के वशंज महाराजा छत्रपति शाहूजी उस संस्था जुड़े थे।

शाहू जी महाराज का अंदाज़ बहुत अलग था, कई बार वे जातिवाद पर सीधे वार करते, कभी प्यार से समझाने की कोशिश करते तो कई बार मज़ाक-मज़ाक में अपनी बात कह जाते थे। उस दौर में ज्यादातर लोग गंभीरता से मानते थे कि किसी दलित के छू जाने से उनका धर्म भ्रष्ट हो जाएगा, दलितों को मंदिरों और कई सार्वजनिक स्थानों पर जाने से रोका जाता था। किन्तु महाराजा छत्रपति शाहूजी अपने राज्य में ही नहीं अपने राजमहल में भी इसके खिलाफ बिगुल बजा रहे थे।

एक बार राजमहल के भीतर बने तालाब के पास एक मराठा सैनिक संताराम और ऊंची जाति के कुछ लोगों ने गंगाराम कांबले को बुरी तरह पीटा, उनका कहना था कि दलित युवक गंगाराम ने तालाब का पानी छूकर उसे अपवित्र कर दिया। उस समय शाहूजी महाराज कोल्हापुर में नहीं थे, जब वे लौटकर आए तो गंगाराम ने रोते-रोते अपनी पूरी बात उन्हें बताई। इस पर शाहूजी बहुत नाराज़ हुए और उन्होंने संताराम को घोड़े के चाबुक से पीटा और नौकरी से निकाल दिया। इसके बाद उन्होंने गंगाराम को सीने से लगाकर कहा कि मुझे दु:ख है कि मेरे राजमहल के भीतर ऐसी घटना हुई और इस भेदभाव पर तमाचा जड़ते हुए उसी दिन पैसे देकर गंगाराम कांबले की चाय की दुकान खुलवा दी। और खुद वहां चाय पीकर इस धारणा को चुनौती देने का फैंसला किया। शाहूजी अच्छी तरह समझते थे कि समाज आदेशों से नहीं बल्कि संदेशों और ठोस पहल से बदलता है। शाहूजी महाराज न सिर्फ खुद चाय पीते, उच्च जाति के अपने कर्मचारियों को भी वहीं चाय पिलवाते, अब किसकी मजाल की राजा को ना कहे।

आप सोच रहे होंगे आज से सौ-सवा सौ साल पहले आखिर छत्रपति शिवाजी महाराज के वशंज महाराजा शाहूजी में अचानक ये बदलाव कैसे आये? कैसे उन्होंने समाज की पीड़ा समझी कैसे वो भारत में एक बनी-बनाई धारणा को तोड़ने निकले थे?

कहते हैं जल का स्रोत वर्षा, झरने, नदी और कूएँ होते हैं, ज्ञान का स्रोत ग्रन्थ। इसी तरह कुप्रथाओं से लड़ने के लिए विचारधारा का स्रोत जरूरी होता है। तत्कालीन कोल्हापुर में जातिवाद, छुआछूत अपने चरम पर था।

साल 1902 की बात है छत्रपति शाहूजी जी महाराज इंग्लैंड जा रहे थे, तब उनकी भेंट जोधपुर के नरेश प्रतापसिंह महाराज से हुई। चर्चा चली आजादी की, चर्चा चली समाज की, चर्चा हुई कुप्रथाओं पर तो जोधपुर नरेश ने छत्रपति शाहूजी जी महाराज को आर्य समाज के तत्कालीन आन्दोलन के बारे बताया। यहीं से उनका आर्य समाज से प्रारंभिक परिचय हुआ।

भारत वापिस आने के बाद छत्रपति शाहूजी जी महाराज वडोदरा के महाराज श्री श्याजीराव गायकवाड़ से मिले। उन्होंने भी महर्षि दयानन्द सरस्वती जी के बारे में बताया और उनकी मुलाकात कराई आर्य समाज के प्रचारक मास्टर आत्माराम अमृतसरी जी से। इस परिचय का परिणाम यह निकला कि शाहूजी महाराज समझ गये कि आने वाले खतरों से अगर कोई निपट सकता है तो है आर्य समाज बस यहीं से शाहू महाराज जी ने अपने राज्य में सुधार कार्य प्रारम्भ कर दिए।

एक संकल्प मन में लिया कि वैदिक धर्म विश्व धर्म बने। इस इच्छा से आपने कोल्हापूर नगर में आर्य समाज का डंका जोर-शोर से बजाया। शिवाजी वैदिक विद्यालय कि स्थापना कराई, शाहू दयानंद नाम से कॉलेज खुलवाया। स्वामी श्रद्धानंद नाम का आर्य मंदिर बनाया। गो हात्या प्रतिबंधक कानून को लागू किया। उस काल की सबसे प्रभावशाली बात। उन्होंने कोल्हापूर में अपने काल में 26000 सत्यार्थ प्रकाश ग्रंथ छपवाए। उनके राज्य में जितने भी वरिष्ठ अधिकारी आदि होते थे, उनको 'सत्यार्थ प्रकाश' का अध्ययन और परीक्षा अनिवार्य किये।

जातिवादी भेदभाव देश के अन्य हिस्सों की तरह महाराष्ट्र के कोल्हापुर में भी अपने चरम पर था, शाहूजी महाराज ने इससे सामाजिक बुराई से निबटने के लिए बहुत रचनात्मक रास्ते अपनाए, भाषण देने की जगह वे काम से मिसाल कायम करना चाहते थे। जैसा हमने अभी उनका चाय की दुकान वाला किस्सा बताया है। शाहूजी महाराज यहाँ नहीं रुके बल्कि 1902 में उन्होंने अपने राज्य में आरक्षण लागू कर दिया जो एक क्रांतिकारी क़दम था, उन्होंने सरकारी नौकरियों में पिछड़ी जाति के पचास प्रतिशत लोगों को आरक्षण देने का फ़ैसला किया। यह एक ऐसा फ़ैसला था जिसने आगे चलकर आरक्षण की संवैधानिक व्यवस्था करने की राह दिखाई। उन्होंने अपने शासन क्षेत्र में सार्वजनिक स्थानों पर किसी भी तरह के छूआछूत पर कानूनन रोक लगा दी थी। सभी वर्गों के लिए उपनयन और वेद के शिक्षा का प्रबंध कर दिया। सभी कथित ऊँचे नीचे वर्गों को एक साथ धार्मिक उत्सवों में भाग लेने के लिए प्रोत्साहित किया। पिछड़ी जातियों को उच्च शिक्षा दिलाने के लिए छात्रवृति दी। उसी छात्रवृति से डॉ. भीमराव अंबेडकर को विदेश जाकर पीएचडी करने का अवसर प्राप्त हुआ। ध्यान दीजिये डॉ. अम्बेडकर जी को यह छात्रवृति मास्टर आत्माराम अमृतसरी जी के सहयोग से मिली थी। जिन्हें शाहू जी महाराज को बड़ोदरा नरेश ने मिलवाया था।

तारीख थी 8 मार्च साल था 1920 तत्कालीन सौराष्ट्र के भावनगर में अखिल भारतीय आर्यसभा (आर्यसमाज) की परिषद हुई। इस सभा के प्रमुख अतिथि राजर्षि शाहू महाराज ने भाषण में कहा सज्जनों हम थोड़ा भारतवर्ष के इतिहास पर नजर डालते हैं, हजार वर्ष पूर्व के भारतवर्ष और आज के भारतवर्ष में जमीन और आसमान का अंतर है। आज पराक्रम, ज्ञान, धर्मशिलता, उदारता सद्गुण लुप्त हो गये हैं। हजारों कुसंस्कार और रूढ़ी परंपराओं से भरा हुवा भारतवर्ष देखकर आश्चर्य नहीं होता। बालविवाह, बहुविवाह, मद्यपान, स्त्रियों को शिक्षा पर पाबंदी, वर्णश्रम धर्म कि अव्यवस्था ऐसे अनेक समाज को घातक रूढीयों से निर्जीव सा बना दिया है। अपने भाषण में अंत में उन्होंने कहा कि वैदिक धर्म ही देश को जागृत कर सकता है, स्वामी दयानंद जी का बताया हुआ यह धर्म विश्वव्यापी बनेगा।

हालाँकि इससे पहले भी शाहू महाराज ने 14 दिसंबर 1918 के अपने भाषण में कहा था कि "प्रत्येक व्यक्ति को अभ्यास और विचार की स्वतंत्रता होनी चाहिए। आर्य समाज ने इसकी अनुमति दी लेकिन विकृत हुआ हिन्दू धर्म इसकी अनुमति नहीं देता। इसलिए पण्डे पुजारियों का धर्म लोगों के बीच विभाजन पैदा कर रहा है और महर्षि जी का बताया वैदिक धर्म लोगों को एकजुट कर रहा है।

आज जब लोग कहते हैं कि शाहू महाराज ने उस समय हिन्दू सामाजिक न्याय के विचार को स्वीकार किया था, तो वे इस तथ्य को नजर अंदाज कर देते हैं कि शाहू महाराज ने जाति प्रभुत्व, पुरुष प्रभुत्व और धार्मिक प्रभुत्व को खारिज कर दिया था। जो जाति पितृसत्ता या किसी एक जाति का अधिकार समझा जाता था। अपने विचारों में उन्होंने वैदिक विचारों को उदार आधुनिक परंपराओं के साथ बताया कि यह पुराने हिन्दू विचारों का पुनरुत्थान नहीं है बल्कि एक नए आधुनिक समाज की कल्पना है जो नागरिकता के विचारों से सम्बन्धित है।

शाहू महाराज ने अपना पूरा जीवन समाज के सभी क्षेत्रों के लोकतंत्रीकरण के लिए मानो निवेश कर दिया था। आज

- जारी पृष्ठ 2 पर

साप्ताहिक आर्य सन्देश

सोमवार 29 अप्रैल, 2024 से रविवार 5 मई, 2024

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15-हनुमान रोड, नई दिल्ली-110001

दिल्ली पोस्टल रजि.नं. डी.एल.(एन.डी.)-11/6071/2024-25-2026

LPC, DRMS, दिल्ली-6 में पोस्ट करने की तिथि 2-3-4/05/2024 (वीर-शुक्र-शनिवार)

पूर्व भुगतान किए बिना भेजने का लाइसेन्स नं. यू. (सी.) 139/2024-25-26

आर. एन. नं. 32387/77 प्रकाशन तिथि: बुधवार 1 मई, 2024

चलो अमेरिका! ।।ओ३म्।। अमेरिका चलो!!

प्रतिष्ठा में,

महर्षि दयानन्द सरस्वती जी की 200वीं जयन्ती एवं
150वें आर्यसमाज स्थापना वर्ष के अवसर पर दो वर्षीय आयोजनों की श्रृंखला में
आर्य प्रतिनिधि सभा अमेरिका के तत्त्वावधान में

अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन

न्यूयार्क (अमेरिका): 18 से 21 जुलाई, 2024

सम्माननीय भाईयो-बहिनो! जैसा कि आप जानते ही हैं कि सम्पूर्ण आर्य जगत के लिए वर्तमान समय अत्यंत उमंग, उत्साह और उल्लास से भरा हुआ है। महर्षि दयानन्द सरस्वती जी की 200वीं जयन्ती और आर्य समाज के 150वें स्थापना वर्ष के दो वर्षीय आयोजनों की श्रृंखला में देश विदेश में भव्य और विराट आयोजन सफलतापूर्वक निरन्तर हो रहे हैं। इस क्रम में आर्य प्रतिनिधि सभा अमेरिका द्वारा अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन का भव्य आयोजन न्यूयॉर्क में किया जा रहा है। इस अवसर पर समस्त आर्यजनों से हमारा अनुरोध है कि -

1 विदेशों में रहने वाले महानुभाव
भारत के अतिरिक्त अन्य देशों में रहने वाले समस्त आर्य महानुभाव अमेरिका सम्मेलन में भाग लेने हेतु सपरिवार पधारें।

2 अमेरिका में रहने वालों को दें निमन्त्रण
आर्यजन स्वयं सपरिवार पहुँचे तथा अमेरिका में रहने वाले पारिवारिक जनों और मित्रों को निमंत्रण देकर आने का अनुरोध अवश्य करें

3 सभा की ओर से आमन्त्रण भेजें
सभा की ओर से आमन्त्रण भिजवाने के लिए विदेश प्रवासी आर्यजनों के नाम, पता एवं सम्पर्क सूत्र 9650183339 पर व्हाट्सएप करें

ऐतिहासिकता के बनें साक्षी

न्यूयार्क में आर्यों का मेला लगेगा, महर्षि दयानन्द का गुणगान किया जाएगा, यह कार्यक्रम अत्यन्त प्रेरक और ऐतिहासिक होगा, जिसके हम सब साक्षी बनेंगे। भारत से महासम्मेलन में सम्मिलित होने वाले समस्त महानुभावों के लिए पंजीकरण कराना अनिवार्य है। आप भी अपना पंजीकरण शीघ्र कराएं।

अमेरिका महासम्मेलन, पंजीकरण, टूर पैकेजे/कार्यक्रम और वीजा आदि की जानकारी/सहयोग प्राप्त करने के लिए श्री सन्दीप आर्य जी 91-9650183339 को व्हाट्सएप्प करें। विदेश में रहने वाले अपने परिजनों का नाम, पता और सम्पर्क सूत्र भी इसी मोबाईल नं. पर नोट कराएं/व्हाट्एप्प करें।

अमेरिका यात्रा एवं टूर पैकेज की जानकारी के लिए दिया गया कोड स्कैन करें।

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के लिए मुद्रक, प्रकाशक व सम्पादक श्री धर्मपाल आर्य द्वारा विद्या दर्शन ऑफसैट प्रिंटर्स, यूनिट नं.-21, प्रधान कॉम्प्लेक्स, मेन रोड मंडावली, दिल्ली-92 से मुद्रित एवं दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15-हनुमान रोड, नई दिल्ली-1; फोन : 23360150; 23365959; E-mail : aryasabha@yahoo.com; Web : www.thearyasamaj.org से प्रकाशित

सम्पादक : धर्मपाल आर्य सह सम्पादक : विनय आर्य व्यवस्थापक : शिवकुमार मदान सह व्यवस्थापक : आर्य डॉ० ओमप्रकाश भटनागर, एस. पी. सिंह